आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-10-14

पुरुषोत्तम संगमयुग पर सदा हम बच्चों के साथ रहने वाले और परमधाम में भी हमारे पास रहने वाले, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बेहद की अपार खुशी का अनुभव करने के लिए हर पल बाबा के साथ रहो.

आज बाबा ने हम बच्चों की झोली खुशियों के खजानों से भर दी हैं. आज की मुरली में बाबा ने हम बच्चों प्रति बहुत सारे महा-वाक्यों कहे है जिसे पढ़ कर ही हमारी आत्मा अपार खुशी का अनुभव करेगी. बाबा ने कहा है की सदा खुशी में रहना हो तो सदा एक बाप के संग में रहो. बाबा का साथ सारे दिन में अनुभव करने के लिए बाबा ने कहे महा-वाक्यों को याद करना चाहिए.

- बाबा पूछते है - सारे विश्व का बाप, सभी आत्माओं का बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे है. इतना तुम्हारे दिमाग में बैठता है? क्योंकि दिमाग है तमोप्रधान, लोहे का बर्तन, आयरन एजड. दिमाग आत्मा में होता है. तो इतना तुम्हारे दिमाग में बैठता है? ☺

- इस समय सारी बेहद की सृष्टि को दोजक कहा जाता है. तो बाबा तुम्हें पूछते है - क्या यह समझते हो गरीब दोजक में है बाकी सन्यासी, साहूकार, बड़े मर्तबे वाले बहिश्त में है? बाबा समझाते है अभी तो सब आत्माये दोजक में है. ☺

- विश्व की सर्व आत्माओं का बाप तुम्हारे सन्मुख बैठ तुमको पढ़ा रहे है. बाप पूछते है - सारा दिन तुम्हारी बुद्धि में यह याद रहता है की बरोबर बाबा हमारे साथ है? कितना समय बैठता है? घण्टा, आधा घण्टा या सारा दिन? यह दिमाग में रखने की भी ताकत चाहिए. ☺

- बाबा बच्चों को पूछते है - तो यह दिमाग में आता है कि बेहद का बाप हमको नई दुनिया का मालिक बनाने हमको लायक बना रहे है? दिल में इतना अपने को लायक समझते हो कि हम सारे विश्व के मालिक बनने वाले है? इससे जास्ती तो खुशी का खजाना कोई मिल सकता नहीं. ☺

- यह देवताये भारत में ही होकर गये है. यह तो सारे विश्व का मालिक बनने वाले है. तो अपने से पूछो - इतना दिमाग में है? वह चलन है? वह बात-चित करने का ढंग है? वह दिमाग है? यहॉ तुम हाथ उठाते हो परन्तु तुम्हारी ऐसी चलन है? बाप तुमको पढ़ाते है यह दिमाग में जोर से बैठता है? बाबा जानता है बहुतो का नशा सोडावोटर हो जाता है. ☺

- यहॉ तो सब है रावण सम्प्रदाय. कथा है ना - राम ने बंदरो की सेना ली. फिर यह-यह किया. अभी तुम समझ रहे हो बाबा ने रावण पर जित पहनाकर तुमको लक्ष्मी-नारायण जैसा बना रहे है. तुम भी समझते हो कि इस ईश्वरीय पढ़ाई से हम यह बनेंगे. ☺

- बाप तुम्हें सारी दुनिया का चक्र समझाते है. हाथ में कोई पुस्तक नहीं है, ऑरली ही समझाते है. ☺

- बाप तुम्हें रोज-रोज समझाते है नशा चड़ाने के लिए. परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो समझते है वह सर्विस में लग जाते हैं तो ताजे रहते हैं. नहीं तो बासी हो जाते हैं. ☺

- सारे सृष्टि को पलटाने वाला, रिज्युनेट करने वाला अर्थात नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप हमको पढ़ा रहे हैं. यह नशा रहे तो सदा खुशी रहेंगी. ☺

- बाबा कहते है - घर में कभी रोना पिटना नहीं है. यहॉ तुमको देवी-गुण धारण करने है. ☺

- भगवान समझाते हैं मेरी ग्लानि करते हैं, मैं तुमको देवता बनाता हूँ मेरी कितनी ग्लानि की है फिर देवताओं की भी ग्लानि कर दी है इतने मूढमति मनुष्य बन पड़े है. कहते है भज गोविन्द.....बाप कहते हैं - हे मूढमति, गोविन्द-गोविन्द, राम-राम कहते बुद्धि में कुछ आता है कि हम किसको भजते है? पथ्थरबुद्धि को मूढमति ही कहेंगे. ☺

- कृष्ण के साथ तुम्हारी प्रीत तो है. कृष्ण के लिए सबसे जास्ती व्रत, नेम आदि कुमारीया, मातायें रखती हैं. निर्जल रहती हैं. कृष्णपुरी अर्थात सतयुग में जाये. परन्तु ज्ञान नहीं है इसलिए बड़ा हठ आदि करते हैं. तुम भी इतना करते हो, कोई को सुनाने के लिए नहीं, खुद कृष्णपुरी में जाने के लिए. ☺

ॐ शांति.